

**नारसाई स्त्री.** (फा.) 1. पहुँच न होने की अवस्था या भाव 2. प्रवेश न पा सकना।

**नारसिंह पुं.** (तत्.) 1. नरसिंह रूपधारी विष्णु 2. एक उपपुराण जिसमें नृसिंह अवतार की कथा है 3. एक तांत्रिक ग्रंथ।

**नारसिंह वपु पुं.** (तत्.) 1. वह व्यक्ति जिसमें नर और सिंह दोनों के अवयव हों 2. विष्णु का अवतार नृसिंह।

**नारसिंहीं वि.** (तत्.) नरसिंह या विष्णु संबंधी।

**नारांतक पुं.** (तत्.) रावण का एक पुत्र।

**नारा पुं.** (तत्.) 1. जल 2. घाघरे, पाजामे आदि के नेफ़े में डाली हुई वह मोटी डोरी जो पहनते समय कमर में बाँधी जाती है, नाला पुं. (अर.) 1. चुनौती देने वाली या ललकारने वाली जोर की आवाज प्रयो. नेता जी का नारा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा" 2. किसी दल, समुदाय आदि की तीव्र अनुभूति और इच्छा का सूचक कोई पद या गढ़ा हुआ वाक्य जो लोगों को आकृष्ट करने के लिए उच्च स्वर से बोला और सबको सुनाया जाता है जैसे- भारत माता की जय।

**नाराइन पुं.** (तद्.) नारायण, विष्णु।

**नाराच पुं.** (तत्.) 1. लोहे का तीर 2. मेघों से आच्छादित दिन, दुर्दिन काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण और चार रगण होते हैं।

**नाराच घृत पुं.** (तत्.) चीता नामक वृक्ष की जड़, त्रिफला, भटकटैया, वायविडंग आदि एक साथ मिलाकर तथा घी में पकाकर तैयार किया हुआ एक औषध जो मालिश, लेप आदि के काम में आता है।

**नाराचिका स्त्री.** (तत्.) सुनारों आदि का छोटा काँटा या तराजू।

**नाराची स्त्री.** (तत्.) सोना तौलने का छोटा काँटा।

**नाराज़ वि.** (फा.) 1. अप्रसन्न, रुष्ट 2. क्रुद्ध।

**नाराज़गी स्त्री.** (फा.) 1. अप्रसन्न या नाराज़ होने की अवस्था या भाव, अप्रसन्नता। 2. क्रोध।

**नाराजी स्त्री.** (फा.) नाराज़गी।

**नारायण पुं.** (तत्.) 1. परमात्मा, ईश्वर 2. विष्णु 3. एक उपनिषद् का नाम 4. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र 5. पूस का महीना, पौष मास।

**नारायणक्षेत्र पुं.** (तत्.) गंगा के प्रवाह से चार हाथ तक की भूमि।

**नारायणतैल पुं.** (तत्.) आयुर्वेद में एक प्रकार का तेल जो मालिश करने के काम आता है।

**नारायणप्रिय पुं.** (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. पाँच पांडवों में से एक सहदेव 3. पीला चंदन।

**नारायणबलि स्त्री.** (तत्.) किसी दुर्घटनावश अथवा आत्महत्या आदि के कारण मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए दाह-संस्कार से पहले प्रायश्चित के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम और प्रेत के उद्देश्य से दी जाने वाली बलि।

**नारायणी स्त्री.** (तत्.) 1. दुर्गा 2. लक्ष्मी 3. गंगा 4. श्रीकृष्ण की वह प्रसिद्ध सेना जो उन्होंने महाभारत के युद्ध में दुर्योधन को उसकी सहायता के लिए दी थी 5. मुद्गल ऋषि की पत्नी का नाम 6. शतावर 7. एक रागिनी का नाम।

**नारायणीय वि.** (तत्.) नारायण संबंधी, नारायण का।

**नाराशंस वि.** (तत्.) मनुष्यों की प्रशंसा या स्तुति संबंधी पुं. 1. वेद के वे मंत्र जिनमें मनुष्यों की प्रशंसा की गई है 2. पितर 3. पितरों के लिए यज्ञ आदि में छोड़ा जाने वाला सोमरस 4. एक प्रकार का पात्र जिससे यज्ञ में पितरों के लिए सोमरस छोड़ा जाता था।

**नाराशंसी स्त्री.** (तत्.) 1. मनुष्यों की प्रशंसा या स्तुति 2. वेदों के उन मंत्रों के समूह जिसमें अनेक राजाओं के दान आदि का प्रशंसात्मक वर्णन है।